



**NEERAJ®**

# हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

## **B.H.D.L.A.-135**

**Chapter Wise Reference Book  
Including Many Solved Sample Papers**

*Based on*

**C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of**

# **I.G.N.O.U.**

**& Various Central, State & Other Open Universities**

*By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

*(Publishers of Educational Books)*

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: [info@neerajbooks.com](mailto:info@neerajbooks.com)

Website: [www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

**MRP ₹ 280/-**

## Content

# हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

Question Paper—June-2024 (Solved) .....	1-3
Question Paper—December-2023 (Solved) .....	1-2
Question Paper—June-2023 (Solved) .....	1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) .....	1-3

---

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	हिंदी की लिपि और वर्तनी का परिचय .....	1
2.	हिंदी की ध्वनियाँ .....	13
3.	हिंदी का प्रयोजनमूलक स्वरूप .....	22
4.	विज्ञान के विषय का बोधन .....	33
5.	संस्कृति विषय का बोधन और शब्दकोश का उपयोग .....	46
6.	समाज विज्ञान विषय का बोधन और निबंध रचना का परिचय .....	57
7.	भाषण शैली .....	64
8.	सामाजिक विज्ञानों की भाषा (इतिहास के संदर्भ में) तथा वर्तनी के कुछ नियम .....	75
9.	सामाजिक विज्ञानों की भाषा (राजनीति विज्ञान) तथा शब्द रचना .....	86

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
10.	मानविकी की भाषा (ललित कला) तथा विशेषण .....	96
11.	विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा तथा पारिभाषिक शब्द .....	111
12.	विधि एवं प्रशासन की भाषा तथा पारिभाषिक शब्द और अर्थ .....	124
13.	वाणिज्य की भाषा तथा पारिभाषिक शब्द .....	144



**Sample Preview  
of the  
Solved  
Sample Question  
Papers**

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

B.H.D.L.A.-135

समय : 3 घण्टे ]

[ अधिकतम अंक : 100

नोट : (i) खण्ड 'क' में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (ii) खण्ड 'ख' में दिए गए निर्देशों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## खण्ड-क

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. प्रयुक्ति को निर्धारित करने के कौन-कौन से आधार हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-23, 'प्रयुक्ति का आधार'

प्रश्न 2. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूपों का परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-24, 'प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप'

प्रश्न 3. वाणिज्य की हिंदी के प्रयोग क्षेत्रों का विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-13, पृष्ठ-145, 'वाणिज्य की हिंदी का व्यापक प्रयोग-क्षेत्र'

प्रश्न 4. राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर स्पष्ट करते हुए राजभाषा हिंदी के स्वरूप पर विचार कीजिए।

उत्तर-ऐसी भाषा जो समस्त राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती हो तथा देश की अधिकांश जनता के द्वारा बोली और समझी जाती हो, 'राष्ट्रभाषा कहलाती है। एक तरह से देखा जाए तो किसी देश की राजभाषा ही राष्ट्रभाषा होती है। लेकिन यह हमेशा और पूर्ण रूप से सत्य नहीं है। वास्तव में राष्ट्रभाषा का शाब्दिक अर्थ ही है समस्त

राष्ट्र में प्रयुक्त होने वाली भाषा। अतः राष्ट्रभाषा आमजन की भाषा होती है और किसी राष्ट्र के प्रायः अधिकांश या बड़े भूभाग और जनसंख्या के द्वारा बोली और समझी जाती है।

एक राष्ट्रभाषा किसी राष्ट्र की बहुसंख्य आबादी की न केवल रोजमर्रा की भाषा होती है, बल्कि यह समूचे राष्ट्र में संपर्क भाषा का भी काम करती है। देश की भाषा की जब भी बात होती है तो अकसर कुछ बातें चर्चा में आ जाती हैं, जैसे-राजभाषा क्या है, राष्ट्रभाषा किसे कहते हैं? क्या राजभाषा और राष्ट्र भाषा एक ही चीज है? यदि नहीं तो राजभाषा और राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है? हिंदी राजभाषा है या राष्ट्रभाषा, यदि राजभाषा है तो हिंदी राष्ट्रभाषा क्यों नहीं है आदि। दूसरी ओर वास्तव में राजभाषा का शाब्दिक अर्थ ही होता है राजकाज की भाषा। अतः वह भाषा जो देश के राजकीय कार्यों के लिए प्रयोग की जाती है "राजभाषा" कहलाती है। राजभाषा किसी देश या राज्य की मुख्य आधिकारिक भाषा होती है जो समस्त राजकीय तथा प्रशासनिक कार्यों के लिए प्रयुक्त होती है। राजाओं और नवाबों के जमाने में इसे दरबारी भाषा भी कहा जाता था। राजभाषा का एक निश्चित मानक और स्वरूप होता है और इसके साथ छेड़छाड़ नहीं की जा सकती। राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है। राजभाषा किसी राज्य के आम जनमानस की भाषा होती है, जिसे राज्य या देश की अधिकांश जनता समझती है और सामान्य बोलचाल में प्रयोग करती है।

## राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
राष्ट्रभाषा सरकारी व्यवस्था और प्रयास से नहीं, बल्कि आम जनता के प्रयोग से स्वतः विकसित होती है।	राजभाषा मुख्यतः सरकारी व्यवस्था और प्रयास पर निर्भर करती है। यह आम जनता के प्रयोग द्वारा स्वतः विकसित नहीं होती।
राष्ट्रभाषा का उपयोग आम जनता करती है।	राजभाषा का उपयोग मुख्यतः सरकारी कर्मचारी करते हैं।
आम जनता अपने सामान्य कामकाज के लिए राष्ट्रभाषा का उपयोग करती है। अतः इसमें बोलचाल के सामान्य प्रचलित शब्दों का उपयोग होता है।	सरकारी कर्मचारी शासकीय कार्य के लिए इसका उपयोग करते हैं। अतः इसमें शासकीय कार्य से संबंधित विशेष शब्दों का उपयोग अधिक होता है।
आम जनता से संबंधित होने के कारण इसमें सरलता होती है।	सरकारी कामकाज से संबंधित होने के कारण इसमें विशिष्टता होती है।
राष्ट्रभाषा में बोलचाल के ऐसे शब्दों का भी उपयोग होता है, जिनका एक से अधिक अर्थ हो सकता है।	राजभाषा में अर्थ की स्पष्टता बनाए रखना आवश्यक होता है। अतः शब्दों का सामान्यतः एक ही अर्थ होता है।
राष्ट्रभाषा के माध्यम से आमतौर पर सामान्य कार्य ही सम्पन्न किए जाते हैं।	राजभाषा के माध्यम से सामान्यतः विशिष्ट कार्य संपन्न किए जाते हैं, जिनमें तकनीकी और कानूनी कार्य भी शामिल हैं।

# QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

B.H.D.L.A.-135

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : (i) खण्ड 'अ' में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। (ii) खण्ड 'ब' में दिए गए निर्देशों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड-अ

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. हिन्दी लिपि और वर्तनी के मानकीकरण सम्बन्धी नियमों का परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'हिन्दी लिपि और वर्तनी का मानकीकरण'

प्रश्न 2. लहजा या अनुतान किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-25, 'लहजा या अनुतान'

प्रश्न 3. भाषा की शैलीगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-64, 'भाषण की शैलीगत विशेषताएं'

प्रश्न 4. हिन्दी की संवैधानिक स्थिति की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-124, 'हिन्दी की सांविधानिक स्थिति'

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) विलोम शब्द

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-86, 'विलोम शब्द'

(ख) कार्यालयी हिन्दी

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-24, 'कार्यालयी हिन्दी'

(ग) शब्द कोश में शब्द ढूँढ़ना

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-46, 'शब्द ढूँढ़ना'

(घ) अव्यय

उत्तर-ऐसे शब्द जिसमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, वे शब्द अव्यय कहलाते हैं। अव्यय सदैव अपरिवर्तित, अविकारी रहते हैं।

जैसे-जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, इधर, कब, क्यों, वाह, आह, ठीक, अरे, और, तथा, एवं, किन्तु, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अतः, अतएव, चूँकि, अवश्य इत्यादि।

अव्यय के भेद-अव्यय शब्दों के मुख्य तक पाँच भेद होते हैं-

क्रियाविशेषण अव्यय, संबंधबोधक अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय, विस्मयादिबोधक अव्यय, निपात अव्यय

जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं, जैसे-जल्दी, अचानक, कल आदि।

जैसे-अचानक आ गया। उदाहरण-परसों घर जाओगे।

क्रियाविशेषण अव्यय के भेद-क्रिया विशेषण अव्यय के भेद निम्नलिखित हैं-

कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय, स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, परिमाणवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय

जिन शब्दों से क्रिया होने के समय का पता चलता है, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं।

जैसे-शाम, सुबह, दोपहर आदि।

रमेश परसों चला जायेगा।

स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय-जिन अव्यय शब्दों से क्रिया के होने के स्थान का पता चलता है, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे-यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ आदि। उदाहरण-तुम्हारा घर कहाँ है।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय-जिन शब्दों से क्रिया के नापतोल माप अथवा परिमाण का पता चलता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे-बहुत, थोड़ा, जरा सा, कम आदि। उदाहरण-तुम थोड़ा काम बोला करो।

रीतिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय-जिन शब्दों से क्रिया के होने की रीति या विधि का पता चलता हो, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं। 1. कार तेज चलती है। 2. तुम तेज दौड़ती हो।

संबंधबोधक अव्यय किसे कहते हैं-जो शब्द वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उसका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाये, उसे संबंधबोधक अव्यय कहते हैं। यदि वाक्य में संज्ञा न हो तो वही अव्यय क्रियाविशेषण कहलायेगा, जैसे-के साथ, पास, आगे, समान, सामने, बाहर, कारण, तुल्य, सदृश आदि।

समुच्चयबोधक अव्यय किसे कहते हैं-जो अव्यय दो या दो से अधिक शब्दों वाक्यांशों अथवा वाक्यों को आपस में जोड़ते हैं या अलग करते हैं उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। उदाहरण-माता और पिता सो रहे हैं। आम या केला खाओ।

समुच्चयबोधक अव्यय के भेद-संयोजक-और, तथा, एवं, जो, अथवा, या, यथा, पुनः, आदि संयोजक कहलाते हैं। विभाजक-किन्तु, परन्तु, लेकिन, बल्कि, ताकि, क्योंकि, वरना, आदि विभाजक कहलाते हैं।

विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं?-जिन शब्दों से 'हर्ष', 'शोक', 'घृणा', 'आश्चर्य', 'भय' आदि का भाव प्रकट होता है उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं। जैसे-छिः! अरे! वाह! हाय! अहा! धिक् आदि।

# Sample Preview of The Chapter

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

## हिंदी की लिपि और वर्तनी का परिचय



### परिचय

हम भारतीय हिंदी बोलते और लिखते हैं। भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर पाते हैं। इसके माध्यम से हम जिस शब्द को जिस रूप में बोलते या उच्चारण करते हैं, उसे हम लेखन द्वारा भी प्रकट कर सकते हैं। भाषा को हम किसी भी लिपि में लिख सकते हैं।

हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी एक भारतीय लिपि है, जिसमें अनेक भारतीय भाषाएं तथा कई विदेशी भाषाएं लिखी जाती हैं। यह बायें से दायें लिखी जाती है। इसकी पहचान एक क्षैतिज रेखा से है, जिसे 'शिरोरेखा' कहते हैं। इसमें प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है)। संस्कृत, हिंदी, मराठी, भोजपुरी, नागपुरी, मैथिली, राजस्थानी आदि भाषाएं और बोलियां भी देवनागरी में लिखी जाती हैं। देवनागरी विश्व में सर्वाधिक प्रयुक्त लिपियों में से एक है। लोग एक ही वर्ण को भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखते हैं। वर्णों और लेखन की विविधता को समाप्त करने के लिए सरकार ने मानक देवनागरी लिपि संबंधी सुझाव तथा वर्तनी के कुछ नियम बताए हैं, जिनसे टंकण, मुद्रण आदि में एकरूपता आ सके। शब्दों को जब लिखित रूप दिया जाता है, तो उसे वर्तनी कहते हैं। हिंदी की वर्तनी के विविध पहलुओं को लेकर 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण से ही विविध प्रयास होते रहे हैं। अधिकतर लोग वर्तनी में मात्राओं के हेर-फेर से गलतियां करते हैं, जैसे-दर्शाया को दरशाया, परिचय को परीचय, प्रत्येक को परतेक, वर्ण को बर्ण आदि। कुछ नियम हैं, जिनके द्वारा वर्तनी के दोषों को कम किया जा सकता है। सही उच्चारण पहचानना और सही उच्चारण करना ही इन गलतियों को कम कर सकता है।

भाषा को सीखने के लिए यह जानना अति आवश्यक है कि उच्चारण और लेखन में हम कैसे तालमेल बना सकते हैं।

### अध्याय का विहंगावलोकन

#### भाषा और लिपि

भाषा संकेतों का एक संग्रह है, जिसे अपनी बात या भावना को प्रेषित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। भाषा हमारे जीवन का अति महत्वपूर्ण अंग होती है। हर व्यक्ति को अपने विचार और भावों को अभिव्यक्त करने के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है। भाषा के आधार पर ही समाज का बहुमुखी विकास निर्भर करता है।

प्रत्येक भाषा के लिए एक लिपि बनी है। किसी भी भाषा के वर्ण जिस विशेष रूप में लिखे जाते हैं, उसे उस भाषा की 'लिपि' कहते हैं।

#### लिपि के फायदे

लिपि का अर्थ होता है-किसी भी भाषा की लिखावट या लिखने का ढंग। ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों या संकेतों का प्रयोग किया जाता है, वही लिपि कहलाते हैं।

प्राचीन काल में लिखना बहुत ही कठिन कार्य था। पहले मनुष्य को सिर्फ बोलना आता था, लिखना नहीं आता था। संस्कृति के विकास के साथ-साथ धीरे-धीरे मनुष्य का ज्ञान बढ़ा और उसने ताड़ के पत्तों या भोजपत्र पर लिखना शुरू किया।

मध्य युग में कागज का निर्माण हुआ, जिससे लिखने का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। लिपि और भाषा दो अलग-अलग चीजें होती हैं। भाषा मूल रूप से बोली जाती है, लिखने को तो उसे किसी भी लिपि में लिख सकते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि जो भाषाएं लिखी जाती हैं, वही प्रगति करती हैं। उनको बोलने वाला समाज उन्नति करता है। लिपि से ही समाज का विकास होता है। लिपि और समाज के विकास का संबंध निम्नलिखित है-

1. लिपि का सबसे बड़ा गुण है कि यह विचारों को सुरक्षित करती है और समय के अनुसार आगे भी बढ़ाती है। लिखे



2 / NEERAJ : हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

- हुए अक्षर ध्वनि की तरह मिटते नहीं हैं, बल्कि इससे अक्षरों को स्थायित्व मिल जाता है, जिससे आप अपने विचार को कभी भी बाद में पढ़ सकते हैं। बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा के स्वरूप में अन्तर होता है।
- मानव विकास के लिए लिपि आवश्यक है। लिपि के कारण ही हम अपनी संस्कृति को सुरक्षित रख सकते हैं। इसी कारण हमारे पास पुराने जमाने की कृतियाँ, ज्ञान-विज्ञान सुरक्षित है। ये विचार पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते जाते हैं और मानव समाज विकास करता जाता है।
  - लिपि का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसके द्वारा हम संप्रेषण का विस्तार कर सकते हैं। बोली गई बातों को कुछ हजार लोग ही सुन सकेंगे, लेकिन लिखी हुई बातों को अखबारों, पुस्तकों या अन्य माध्यमों द्वारा लिखकर पहुँचाया जाये, तो लाखों लोग आपके विचार को सुन सकेंगे तथा यह हमेशा बना रहेगा।

**लेखन की विधि**

हम जिस क्रम में ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उसे उसी क्रम में लेखन द्वारा प्रेषित करना 'लिपि' है। लिपि में उच्चरित (बोले गये) ध्वनियों के लिए चिह्न निश्चित करते हैं, जिन्हें वर्ण कहते हैं, जैसे- 'प' वर्ण एक ध्वनि का प्रतीक है और 'ब' किसी दूसरी ध्वनि का। 'काल' शब्द में तीन ध्वनियाँ हैं-क, आ, ल। किसी भी भाषा की वर्णमाला में सभी ध्वनियों के चिह्नों की व्यवस्था होती है। हिंदी भाषा की वर्णमाला लिपि देवनागरी लिपि कहलाती है।

सभी भाषाओं की अलग-अलग लिपि होती है। देवनागरी बायें से दायें लिखी जाती है, अरबी भाषा की लिपि दायें से बायें लिखी जाती है। जापानी भाषा के वर्ण ऊपर से नीचे के क्रम में लिखे जाते हैं। इन विभिन्नताओं के बावजूद हर लिपि, रेखाओं और आकारों के द्वारा उच्चरित भाषा का संकेत करती है।

'देवनागरी' लिपि की तुलना 'रोमन' लिपि से की जा सकती है। देवनागरी में प्रायः शब्दों के आदि और अंत को छोड़कर व्यंजनों के साथ स्वर के स्थान पर केवल मात्राओं का प्रयोग होता है, जबकि रोमन लिपि में हमेशा शब्दों में व्यंजन स्वरों का प्रयोग अनिवार्य है।

**देवनागरी लिपि**

**वर्णों का मानक रूप**

हिंदी का क्षेत्र बहुत बड़ा होने के कारण इसके वर्णों के लेखन में विविधता है, जिससे मुद्रण यानी छपाई और प्रचार-प्रसार में कठिनाई होती है। वर्तमान युग में कम्प्यूटर के माध्यम से शब्दों का संयोजन किया जाता है। दोनों ही स्थितियों में मानक वर्णों का प्रयोग अनिवार्य है।

भाषा में एकरूपता लाने के लिए भारत सरकार ने केंद्रीय हिंदी निदेशालय को मानक देवनागरी लिपि निर्धारित करने का कार्य

सौंपा था। निदेशालय ने 1966 व 2006 में मानक देवनागरी लिपि प्रस्तुत की।

**स्वर :** अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

**मात्राएँ :** ा (आ), ि (इ), िी (ई), उ (उ), ू (ऊ), ॄ (ऋ), ॆ (ऐ), ो (ओ), ौ (औ),

**अनुस्वार :** ँ (अं)

**विसर्ग :** ः (अः)

व्यंजन	क	ख	ग	घ	ङ
	च	छ	ज	झ	ञ
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न
	प	फ	ब	भ	म
	य	र	ल	व	
	श	ष	स	ह	

**द्विगुण व्यंजन :** ङ्ग

**संयुक्त व्यंजन :** क्ष त्र ज्ञ श्र

**लेखन की कठिनाइयाँ**

लेखन में कुछ शब्दों के कारण उसे पढ़ने-लिखने में कठिनाई आती है; जैसे-पद्मा, उद्यान, उद्धार। 'झ' दो वर्णों का योग है- द् + म। इन शब्दों को हलंत ( ) चिह्न का प्रयोग करके सरलीकृत करके लिखा जा सकता है, जैसे-पद्मा, उद्यान, उद्धार। 'झ' (या द्म) संयुक्त वर्ण कहलाते हैं।

**संयुक्त वर्ण बनाने की विधि-**मानक वर्णों से संयुक्त व्यंजन बनाने के संदर्भ में तीन बातें हैं-

- र, ऋ से बनने वाले संयुक्त व्यंजनों के निम्नलिखित रूप होंगे, जैसे-क्रम, श्रम, तर्क, ड्रामा, बर्, रुपया, रूप, हृदय, शृंगार, दृष्टि इत्यादि।
- आप निम्नलिखित वर्णों को देखिए और उसमें समान तत्व पहचानिए।

क्ष स श व ल य

- अब वर्ण क और फ से संयुक्त वर्ण बनाने के लिए इनकी आखिरी रेखा थोड़ी काट दें, तो संयुक्त वर्ण बन जाएंगे; जैसे-क, फ - मुक्त, हफ्ता।

- अब कुछ वर्ण और बचे हैं-

छ ट ठ ड ढ द ह

- अब कुछ वर्ण और बचे हैं

इनसे निम्नलिखित प्रकार से वर्ण बना सकते हैं-

इकट्टा, धनाद्दय आदि।

**वर्तनी**

वर्तनी में सरल प्रक्रिया से एक ही शब्द को चार रूपों में लिख सकते हैं; जैसे-

संबंध सम्बन्ध संबन्ध सम्बन्ध

लेकिन इससे एकरूपता नहीं आती है और सीखने वालों को कठिनाई होती है।

हिंदी निदेशालय के अनुसार 'न' वर्ण बाकी चार वर्णों से पहले अनुस्वार में दर्शाया जाए।

जैसे—न को त, थ, द, ध से पहले लिखा जाए—

**मानक रूप**—संबंध, अंत, पंथ, अंधा

**पूर्व रूप**—सम्बन्ध, अन्त, पन्थ, अन्धा

इसी तरह नासिक्य व्यंजनों के साथ कुछ और उदाहरण—

हिंदी टंकण चंचल मंत्री गंगा

झंडा संभव पंछी संघ प्रबंधक

इस पद्धति से भाषा में एकरूपता और सरलता आएगी, लेकिन नासिक्य व्यंजनों के बाद उस वर्ग के पहले चार वर्णों के अलावा और कोई वर्ण आएगा, तो नासिक्य व्यंजन का आधा रूप लिखा जाएगा, अनुस्वार नहीं; जैसे—

सही शब्द		गलत शब्द
पुण्य	ण् + य	पुंय
गन्ना	न् + न	गंना
निम्न	म् + न	निंन

### वर्तनी के कुछ नियम

उच्चरित शब्द के लेखन में प्रयोग होने वाले लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहते हैं। वर्तनी के नियम निम्नलिखित हैं—

1. जिन व्यंजनों के अंत में खड़ी पाई आती है, उन्हें जब दूसरे व्यंजन के साथ जोड़ते हैं, तो इसे हटा दिया जाता है; जैसे—'तथ्य' में 'थ' का खड़ी पाई रहित रूप प्रयोग होता है।
2. जब किसी शब्द में श, ष, में से सभी अथवा दो का एक साथ प्रयोग हो, तो उनका प्रयोग वर्णमाला क्रम से होता है; जैसे—शासन, शेषनाग, विशेष।
3. जब य, र, ल, व और श, ष, स, ह से पहले 'सम्' उपसर्ग लगता है, तो वहाँ 'म्' के स्थान पर अनुस्वार लगता है; जैसे—

सम् + वाद = संवाद

सम् + सार = संसार

अनुस्वार का उच्चारण ङ्, ण्, न्, म् के समान होता है; जैसे—कंघी (कङ्घी), घंटी (घण्टी), संत (सन्त), पंप (पम्प)। अनुस्वार से मिलती-जुलती एक ध्वनि अनुनासिक भी है, जिसका रूप (ँ) है। इसे चन्द्रबिंदु कहते हैं। इन दोनों में केवल यह भेद है कि अनुस्वार की ध्वनि कठोर होती है और इसका उच्चारण नाक से होता है। अनुनासिक की ध्वनि कोमल होती है और इसका उच्चारण मुख तथा नासिका दोनों से होता है; जैसे—हंस और हँस।

हंस (अनुस्वार का प्रयोग) — एक पक्षी

हँसना (अनुनासिक का प्रयोग) — एक क्रिया व्यापार

### हिंदी लिपि और वर्तनी का मानकीकरण

हिंदी के विविध पहलुओं को लेकर 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण से ही विविध प्रयास होते रहे हैं। इसी तारतम्य में केंद्रीय

हिंदी निदेशालय द्वारा वर्ष 2003 में देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी के मानकीकरण के लिए अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। इस संगोष्ठी ने 'मानक हिंदी वर्तनी' के लिए निम्नलिखित नियम निर्धारित किए गए।

वर्तनी संबंधी अद्यतन नियम इस प्रकार हैं—

#### 1. संयुक्त वर्ण—

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन—संयुक्ताक्षर बनाने के लिए खड़ी पाई हटाई जाती है; जैसे—ख्याति, प्यास, सभ्य, विघ्न, श्लोक आदि।

(ख) अन्य व्यंजन—

(अ) 'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर—पक्का, दफ्तर आदि।

(आ) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप—प्रकार, धर्म, राष्ट्र।

(इ) ङ, छ, ट, ठ, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ, जैसे: लट्टू, बुड्ढा, विद्या, आदि।

(लट्टू, बुड्ढा, विद्या नहीं)।

(ई) 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा।

(उ) हल् चिह्न युक्त वर्ण बनाने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व, जैसे—कुट्टिम, द्वितीय आदि।

(ऊ) संस्कृत में संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे, जैसे—

संयुक्त, विद्या, विद्वान, वृद्ध, द्वितीय, बुद्धि आदि।

2. विभक्ति—चिह्न—इसमें सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रतिपादक से अलग लिखा जाएँ; जैसे—राम ने, राम को स्त्री ने, स्त्री को आदि।

सर्वनाम के साथ दो विभक्ति चिह्न होने पर पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाएँ; जैसे—उसके लिए, उसमें से।

3. क्रियापद—संयुक्त क्रियापद में सभी क्रियाएं अलग-अलग लिखी जाएँ; जैसे—जा सकता है, कर सकता है, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।

4. हाइफन (योजक चिह्न)—हाइफन का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है; जैसे—द्वंद्व समास में—राम-सीता, देख-रेख, पढ़ना-लिखना आदि।

(क) सा, जैसा आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए, जैसे—तुम-सा, राम-जैसा।

(ख) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं, जैसे भू-तत्व। सामान्यतः तत्पुरुष समासों में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे—रामराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या आदि।

4 / NEERAJ : हिंदी भाषा : विविध प्रयोग

- (ग) कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफन का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे-द्वि-अक्षर, द्वि-अर्थक आदि।
5. अव्यय-‘तक’, ‘साथ’ आदि अव्यय सदा पृथक लिखे जाएं; जैसे-उनके साथ, वहाँ तक। हिंदी में कुछ ऐसे अव्यय हैं, जो भावों का बोध कराते हैं। उदाहरणार्थ-ओह, अहा, भर, क्या, किन्तु, मगर, लेकिन इत्यादि।
6. श्रुतिमूलक ‘य’, ‘व’
- (क) ‘य’, ‘व’ श्रुतिमूलक शब्द का प्रयोग विकल्प से होता है; जैसे-लिए-लिये, हुआ-हुवा आदि में से पहले स्वरत्मक रूपों का प्रयोग किया जाए। इसे सभी रूपों और स्थितियों अर्थात् क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि में प्रयोग किया जाता है; जैसे-दशाएं, गए, नई किताब, मोहन के लिए, पानी लिए हुए इत्यादि।
- (ख) यदि ‘य’ श्रुतिमूलक व्याकरणिक न होकर शब्द का ही मूल तत्त्व हो, वहां पर वैकल्पिक श्रुतिमूलक बदलने की आवश्यकता नहीं है; जैसे-जातीय भेदभाव, स्थायी आदि। इसे इस प्रकार लिखना गलत होगा-जातीए, स्थाई।
7. अनुस्वार तथा अनुनासिकता-चिह्न (चंद्रबिंदु)
- (क) अनुस्वार व्यंजन है और अनुनासिकता स्वर का नासिक्य विकार है। हिन्दी में दोनों अर्थभेदक भी हैं। अनुस्वार (ँ) और अनुनासिकता चिह्न (ँ) दोनों ही प्रचलित रहेंगे।
- (ख) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहां पंचम वर्ण के बाद शेष चार अक्षरों में से कोई भी अक्षर हो, तो एकरूपता और लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार (ँ) का ही प्रयोग होना चाहिए; जैसे-चंचल, कंजूस, कंठ आदि। इसे चंचल, कन्जूस, कन्ठ लिखना उचित नहीं होगा।
- हिंदी में अनुस्वार अर्थात् बिंदी का प्रयोग करना ही उचित होगा। यदि पंचम वर्ण के बाद किसी और वर्ण का कोई वर्ण आए या पंचम वर्ण का वही वर्ण दुबारा आए तो पंचम वर्ण अनुस्वार के रूप में कोई बदलाव नहीं होगा।
8. विदेशी ध्वनियां
- (क) उर्दू से आए अरबी-फारसी मूलक वे शब्द जिनकी विदेशी ध्वनियों का परिवर्तन हिंदी ध्वनियों में हो चुका है, उन्हें हिंदी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि वे शब्द हिंदी के अंग बन चुके हैं; जैसे-कलम, किला आदि।
- लेकिन जहां पर उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो वहां पर उनके हिन्दी में प्रचलित रूपों

- नुक्ते के स्थान पर नुक्ते लगाए जाने चाहिए; जैसे-जमीन-जमीन, कफन-कफन, खाना-खाना आदि।
- (ख) अर्धविकृत ‘ओ’ (ँ) ध्वनि का प्रयोग अंग्रेजी के उन शब्दों में किया जाता है। इनका शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर ‘आ’ की मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र (ँ) का प्रयोग किया जाता है; जैसे-डॉक्टर, फुटबॉल इत्यादि। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से नए शब्द ग्रहण करने तथा उनके देवनागरी लिप्यंतरण का संबंध है, अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण इतना क्लिष्ट नहीं हो कि उसके वर्तमान में देवनागरी वर्णों में अनेक नए संकेत-चिह्न लगाने पड़े। अंग्रेजी-देवनागरी लिप्यंतरण मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिक-से-अधिक निकट होना चाहिए।
- (ग) कुछ प्रचलित शब्द हिंदी में ऐसे हैं, जिनकी वर्तनी में दो-दो रूप चल रहे हैं; जैसे-गरमी/गर्मी, बरफ/बर्फ, बिलकुल/ बिल्कुल, सरबत/सर्बत, वापस/वापिस, बीमारी/बिमारी आदि शब्द। ये दोनों रूप ही मान्य हैं।

9. हल चिह्न (ँ)-इस चिह्न (ँ) को हल चिह्न कहा जाए, न कि हलंत। व्यंजन के नीचे लगा यह चिह्न उस व्यंजन के स्वर रहित होने की सूचना देता है अर्थात् वह विशुद्ध रूप से व्यंजन है।
- संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी में सामान्यतः संस्कृत रूप ही रखा जाए, लेकिन हिंदी के जिन शब्दों के प्रयोग में हल चिह्न लुप्त हो चुका है, उसे उन शब्दों में फिर से हल चिह्न लगाने का यत्न नहीं किया जाए; जैसे-विद्युत, विद्वान आदि के त, न में और इसी प्रकार से भगवान, श्रीमान के स्थान पर यदि भगवन्, श्रीमन् शब्दों का प्रयोग हो तो हल चिह्न अवश्य प्रयोग करना चाहिए।
10. स्वन परिवर्तन-संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों-का-त्यों ही ग्रहण किया जाए। अतः ‘ब्रह्मा’ को ‘ब्रम्हा’, ‘चिह्न’ को ‘चिन्ह’, ‘ऋण’ को ‘रीण’ में बदलना उचित नहीं है। इसी प्रकार कुछ अन्य शब्द-

अशुद्ध प्रयोग	शुद्ध प्रयोग
ग्रहीत	गृहीत
दृष्टव्य	द्रष्टव्य
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
अत्याधिक	अत्यधिक

11. विसर्ग-तत्सम शब्दों के अंत में प्रयुक्त विसर्ग का प्रयोग अनिवार्य है; जैसे-अतः पुनः, प्रायः, वस्तुतः, क्रमशः आदि।
- यदि संस्कृत के वे शब्द जिनमें तत्सम रूप प्रयुक्त हो तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए; जैसे-‘दुःखानुभूति’। लेकिन जब उस शब्द के तद्भव रूप में विसर्ग का लोप